श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

कलस गुजराती–तौरेत

तौरेत उस किताब का नाम है जो मूसा पैगम्बर को उतरी थी। उसका सार इस कलस वाणी में आया है।

रासनो प्रकास थयो, ते प्रकासनो प्रकास।
ते ऊपर वली कलस धरूं, तेमां करूं ते अति अजवास।। १ ।।

रास के छिपे भेद जाहिर हो गए। प्रकास के भी भेद जाहिर हो गए। अब इनके ऊपर कलस (कलश) रखती हूं। (जैसे मन्दिर पर कलश शोभा देता है, उस प्रकार से रास और प्रकास पर यह कलस वाणी रखती हूं) जिससे सब संशय मिट जाएं और ज्ञान का उजाला हो जाए।

मारा साथ सुणो एक वातडी, कह्यो सतनो में सार।
ए सारनो सार देखाडी, जगवुं ते मारा आधार।। २ ।।

हे साथजी! मेरी एक बात सुनो। मैंने रास और प्रकास की वाणी का सार बतला दिया है। अब इन दोनों के सार का सार दिखाकर अपने सुन्दरसाथ को जगाती हूं।

श्री धणिए आवी मूने धामथी, जगवी ते जुगतें करी।
ते विध सर्वे रुदे अंतर, चित माहें चोकस धरी।। ३ ।।

धाम धनी ने धाम से आकर बड़ी युक्ति से मुझे जगाया। उस सब हकीकत को चित्त में सावचेत (सावधान) होकर हृदय में रखा।

मूने मेलो थयो मारा धणी तणो, ते वीतकनी कहूं विध।
ते विध सर्वे कही करी, दऊं ते घरनी निध।। ४ ।।

मेरी मुलाकात मेरे धनी से हुई थी। उस बीतक (विवरण) की हकीकत कहती हूं। वह सब बताकर घर की न्यामत दूंगी।

में जे दिन चरण परसिया, मूने कह्यूं तेहज दिन।
दया ते कीधी अति घणी, पण मूने जोर थयूं सुपन।। ५ ।।

मैं जैसे ही धनी के चरणों में गई उसी दिन मुझे उन्होंने कहा। मेरे ऊपर अत्यधिक कृपा की, पर उस समय मुझे सुध नहीं थी।

Nijanand App

मोहे समागम पिउसों, वाले पूछियो विचार।
आपोपूं तमे ओलखी, प्रगट कहो प्रकार।। ६ ।।

मुझे जब धनी मिले तो उन्होंने मुझसे पूछा, क्या तुमने अपने को पहचाना है? यदि पहचाना है तो साफ-साफ बताओ।

आ मंडल तां तमे जोइयूं, कहो वीतकनी जे वात।
आ भोमनो विचार कही, ए सुपन के साख्यात।। ७ ।।

यह ब्रह्माण्ड तो तुमने देखा है। तुम इसकी हकीकत बताओ। यह भूमि सपने की है या साक्षात् है?

आ जोई जे तमे रामत, कहो रामत केही पर।
आ भोम केही तमे कोण छो, किहां तमारा घर।। ८ ।।

यह खेल जो तुमने देखा है, कहो, किस प्रकार का है? यह भूमि कौन सी है? तुम कौन हो? तुम्हारा घर कहां है?

आ कीहे अस्थानक तमे आवियां, जागीने करो विचार।
नार तूं कोण पिउ तणी, कहो एह तणो विस्तार।। ९ ।।

यह कौन सा स्थान है जिसमें तुम आए हो? जागृत होकर विचार करो। तुम किस प्रीतम की अंगना हो? इसको विस्तार से बताओ।

तमे वीतकनूं मूने पूछयूं, सुणो कहूं तेणी वात।
आ मंडल तां दीसे सुपन, पण थई लाग्यूं साख्यात।। १० ।।

अब श्री श्यामाजी राजजी को जवाब देती हैं। (देवचन्द्रजी श्यामजी के मन्दिर में जवाब देते हैं) आपने जो हकीकत पूछी है मैं उसकी बात बताती हूं, सुनो। यह ब्रह्माण्ड सपने का दिखता है, परन्तु लगता है जैसे साक्षात् है।

निकल्यूं न जाय ए मांहेंथी, क्याहें न लाभे छेह।
एमां पग पंखीनों दीसे नहीं, कहूं सनंध सर्वे तेह।। ११ ।।

इसमें से निकला नहीं जाता। कहीं भी इसका किनारा नहीं मिलता। इसमें पक्षी के पग के समान भी कुछ नजर नहीं आता, पर इसकी सारी हकीकत मैं कहती हूं।

आ भोमने नव ओलखूं, नव ओलखूं मारूं आप।
घर तणी मूने सुध नहीं, सांभरे नहीं मारो नाथ।। १२ ।।

इस भूमि को मैं नहीं जानती और न अपने ही को पहचानती हूं। मेरा घर कहां है, यह मुझे सुध नहीं है और न प्रीतम की ही याद आती है।

आ मंडल दीसे छे पाधरा, एतां मूल विना विस्तार।
रामतनो कोई कोहेडो, न आवे ते केमें पार।। १३ ।।

यह ब्रह्माण्ड सीधा दिख रहा है, परन्तु इसके विस्तार का कोई आधार (मूल) नहीं है। यह तो कोई खेल की धुन्ध है, जिसका किसी तरह से पार नहीं है।

Nijanand App

आ मंडल मोटो रामत घणी, जुओ ऊभो केम अचंभ।
एणे पाइए पगथी जिहां जोइए, तिहां दीसे ते पांचे थंभ।। १४ ।।

यह मण्डल अति बड़ा है और इसके अन्दर माया के तरह-तरह के खेल हैं। देखो, किस आश्चर्य से खड़ा है। इसकी नींव को जहां से भी देखें वहां पर पांच स्तम्भ (जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश) नजर आते हैं।

पांचे ते जोइए ज्यारे जुजवा, न लाभे केहेनो पार।
भेला ते करी वली जोइए, तो रची ऊभो संसार।। १५ ।।

इन पांचों को जब अलग करके देखते हैं तो इनका पार नहीं मिलता। जब इन पांचों को मिलाकर देखें तो यह संसार का रूप दिखता है।

मांहें थंभ एके थिर नहीं, फरे ते पांचे फेर।
एनो फेरवणहार लाधे नहीं, मांहें ते अति अंधेर।। १६ ।।

इन पांचों में से एक भी अखण्ड नहीं है। इन पांच तत्वों को कौन चलाता है, इसका भी पता नहीं है। पांचों आते-जाते रहते हैं, क्योंकि इनके अन्दर अज्ञान का अंधेरा है।

पांचे ते फरे फेर जुजवा, थाय नहीं पग थोभ।
ए अजाडी कोई भांतनी, ते नहीं जोवा जोग।। १७ ।।

पांचों अलग-अलग घूमते हैं और ठहरते नहीं हैं। यह विचित्र तरीके की लीला है जो देखने लायक नहीं है।

ए अजाडी बंध उथमें, बांधी नाखे तत्काल।
द्रष्ट दीठे बंध पडे, एहेवी देखीती जमजाल।। १८ ।।

यह माया ऐसी वीरान है जिसमें उलटे बन्ध बंधे हैं। यह तुरन्त बांध भी देती है और तोड़ भी देती है। इसको देखने मात्र से बन्धन पड़ जाते हैं। इस तरह का यह यमराज का विचित्र जाल है।

काली ते रात कोई उपनी, सूझे नहीं सल सांध।
दिवस तिहां दीसे नहीं, मांहें ते फरे सूरज ने चांद।। १९ ।।

यह कोई ऐसी काली रात के समान बनी है जिसमें कोई सूराख (रास्ता) निकलने का दिखाई नहीं देता। सूर्य चांद घूमते हैं, परन्तु दिन नहीं दिखता (ज्ञान नहीं दिखता)।

दिवस नहीं अजवास नहीं, ए अंधेरना तिमर।
एणे कांई सूझे नहीं, आ भोम आप न घर।। २० ।।

यहां ऐसा अन्धकार फैला है जहां न दिन दिखाई देता है न प्रकाश। इस कारण से इसमें इस भूमि की, अपनी तथा अपने घर की पहचान नहीं होती।

अउठ कोट सूरज फरे, फरे रात ने प्रभात।
एकवीस ब्रह्मांड इंडा मधे, एके मांहें न थाय अजवास।। २१ ।।

साढ़े तीन करोड़ योजन में रात-दिन सूर्य घूमता है। इस इण्ड में इक्कीस ब्रह्माण्ड हैं, परन्तु किसी एक में भी उजाला नहीं होता है।

Nijanand App

सुध एणे थाय नहीं, सामूं रदे थाय अंधेर।
अजवास ए पोहोंचे नहीं, दीठे चढे सामा फेर।। २२ ।।

इसकी खबर तो होती नहीं है और सामने हृदय में अंधेरा और छा जाता है। उजाला तो पहुंचता नहीं है, इसे सामने देखकर और भ्रम में पड़ जाते हैं।

फरे खटरुत ऊष्णकाल, वरखा ने सीतकाल।
नखत्र तारे फरे मंडल, फरे जीवने जंजाल।। २३ ।।

गर्मी, वर्षा, सर्दी की छः ऋतुएं इसमें घूमती हैं। नक्षत्र तारा मण्डल में घूमते हैं और जीव इसी जंजाल में घूमता है।

वाए बादल गाजे विजली, जलधारा न समाय।
फेर खाय पांचे पाधरा, मांहेंना मांहें समाय।। २४ ।।

हवा, बादल, बिजली की गर्जना तथा पानी का बरसना, आदि की गिनती नहीं है। यह पांचों अपना रूप दिखाकर फिर अपने में ही समा जाते हैं।

पांचे ते थई आवे पाधरा, जाणूं थासे ते प्रलेकाल।
बल देखाडी आपणूं, थई जाय पंपाल।। २५ ।।

जब पांचों सामने आते हैं तो लगता है महाप्रलय हो जायेगा। यह पांचों अपना बल दिखाकर झूठ में समा जाते हैं।

पांचे ते थई आवे दोडतां, देखाडवा आकार।
ततखिण ते दीसे नहीं, परपंच ए निरधार।। २६ ।।

फिर अपने आकार दिखाने के लिए पांचों दौड़ते आते हैं और उसी क्षण पांचों छिप जाते हैं। इस तरह से यह पांचों प्रपंच हैं, छल के रूप हैं, झूठे हैं।

ए पांचे थकी जे उपना, दीसे ते चौद भवन।
जीवन मांहें लाधे नहीं, जेनी इछाए उतपन।। २७ ।।

इन पांचों से जो पैदा हुए हैं वही चौदह लोक दिखाई देते हैं। जिनकी इच्छा मात्र से यह बने हैं वह इनको प्राप्त नहीं होता।

एहनूं मूल डाल लाधे नहीं, ऊभो ते केणी अदाए।
मांहें संध कोई सूझे नहीं, एमां दिवस न देखूं क्यांहे।। २८ ।।

इस ब्रह्माण्ड का मूल कहां है, डालें कहां हैं तथा किस तरह से यह खड़ा है, इसका ज्ञान किसी को नहीं है। इसमें कोई सूराख भी दिखाई नहीं पड़ता तो पूरा दिन कहां दिखाई पड़ेगा (ज्ञान की एक किरण भी नहीं मिल रही है तो पूरा ज्ञान कहां से मिलेगा)।

सुर असुर मांहें फरे, पसु पंखी मनख।
मछ कछ वनराय फरे, फरे जीव ने जंत।। २९ ।।

इस ब्रह्माण्ड में देवता, दानव, पशु, पक्षी, मनुष्य, मछली, कछुआ, वनस्पति तथा समस्त जीव-जन्तु घूमते रहते हैं।

Nijanand App

गिनान नी इहां गम नहीं, सब्द न पामे सेर।
गिनान दीवो तिहां सूं करे, ब्रह्मांड आखो अंधेर।। ३० ।।

यहां किसी को ज्ञान की (सच्चाई की) पहचान नहीं है। यहां के शब्द भी आगे नहीं जाते। यहां दीपक के समान टिमटिमाने वाला ज्ञान क्या करेगा? यहां पर चौदह लोकों में ही अज्ञानता का अंधेरा छाया है।

कोहेडो काली रातनो, एमां पग न काढे कोए।
अनेक करे अटकलो, पण बंध न छूटे तोहे।। ३१ ।।

यह अज्ञानता की काली रात की धुन्ध है, जिसमें एक पग भी आगे कोई नहीं चलता। बहुत से ज्ञानी लोग अपनी अटकल से अनुमान लगाते हैं, पर उनसे भी बन्धन नहीं छूटते।

तिमर घोर अंधेर काली, अने अंधेरनो नहीं पार।
मोंह लगे मोहजल भर्‌यूं, असत ने आसाधार।। ३२ ।।

घोर अंधेरा है, काली रात है जिसमें अंधेरे का पार नहीं है। मुख तक मोहजल भरा है (मोह ही मोह है) जो लगातार झूठा है।

पांचे ते उतपन मोहनीं, मोह तो अगम अपार।
नेत नेत कही निगम वलिया, आगल सुध न पडी निराकार।। ३३ ।।

मोह तत्व से ही पांचों तत्व पैदा हुए हैं। मोह का पारावार नहीं है और अगम है, जहां पहुंचा नहीं जा सकता। इसलिए वेद नेति-नेति करके पीछे आ गए और उन्हें निराकार के आगे की खबर नहीं हुई।

एमां पग पंथज जोवंतां, बंध पड्या ते जाण सुजाण।
अनेक वचन विचार कही, नेठ लेवाणा निरवाण।। ३४ ।।

ऐसे ब्रह्माण्ड में जो रास्ता खोज रहे होते हैं वह निश्चित ही मुक्त तो होना चाहते हैं और अपने विचार भी प्रकट करते हैं, परन्तु ऐसे जानकार भी बन्धन में फंसे पड़े हैं।

एमां जेम जेम जोई जोई जोईए, तेम तेम बंध पडता जाय।
अनेक उपाय जो कीजिए, प्रकास केमे नव थाय।। ३५ ।।

इसमें ज्यों-ज्यों देखते हैं, खोजते हैं, त्यों-त्यों उतने बन्धन ही पड़ते जाते हैं। कितने भी उपाय करें ज्ञान का उजाला किसी तरह भी नहीं मिलता।

अनेक बुध इहां आछटी, अनेक फरवया मन।
अनेक क्रोधी काल क्रांत थईने, भाज्या ते हाथ रतन।। ३६ ।।

अनेक की बुद्धि पिछड़ गई और अनेक के मन फिर गए। विश्वास टूट गया। अनेक क्रोधी स्वभाव वाले मर गए और अपना मनुष्य तन भी गंवा दिया।

किहां थकी अमे आवियां, अने पड्या ते अंधेर मांहें।
जीवन जोत अलगी थई, मांहेंथी न केमे निसराय।। ३७ ।।

हम कहां से आये हैं और किस अंधेरे में पड़े हुए हैं, यह खोजते-खोजते उनका जीवन चला गया, पर यहां से बाहर न निकल सके। मुक्ति नहीं मिली।

Nijanand App

ए मंडल धणी त्रैगुण कहावे, जाणूं इहांथी टलसे अंधेर।
पार वाणी बोले अटकलें, तेणे उतरे नहीं फेर।। ३८ ।।

ब्रह्माण्ड के मालिक ब्रह्मा, विष्णु और महेश कहलाते हैं। सोचती थी इनके ज्ञान से अंधेरा मिट जाएगा। पर यह भी अटकल से वाणी बोलते हैं। जिससे इनका भी आवागमन का चक्कर मिटता नहीं है।

एनों बार उघाडी पाधरू, चाली न सके कोय।
ब्रह्मांडना जे धणी कहावे, ते बांध्या रामत जोय।। ३९ ।।

इस ब्रह्माण्ड का सीधा दरवाजा खोलकर कोई चल नहीं सकता। ब्रह्माण्ड के जो मालिक त्रिगुण कहे जाते हैं, वह भी इस खेल को देखकर इसी में बंध गए।

बीजा फरे छे फेरमां, एने फेर नहीं लगार।
पण बांध्या बंध जे खरी गांठे, आव्या ते मांहें अंधार।। ४० ।।

दूसरे और भी कई जन्म-मरण के चक्कर में घूमते हैं, परन्तु इनको इसी ब्रह्माण्ड में दुबारा जन्म नहीं लेना पड़ता, परन्तु यह भी माया के मजबूत बन्ध में बंधे हैं और अन्धकार में ही पड़े हैं।

ए जेणे बांध्या तेणे छूटे, तिहां लगे न आवे पार।
पार सुध पामे नहीं, कोई कोहेडो अंधार।। ४१ ।।

यह बन्धन जिसने बांधे हैं वही खोल सकता है और तब तक इसका पार नहीं पाया जा सकता। यह ब्रह्माण्ड ऐसा कोहेड़ा (रहस्य, कोहरा) है कि यहां से कोई पार की खबर ही नहीं मिलती।

बुध विना इहां बंधाई, पडिया ते सहु फंद मांहें।
ए वचन सुणी करी, एणे समे ते ग्रही मारी बांहें।। ४२ ।।

श्री श्यामाजी कहती हैं कि जागृत बुद्धि के बिना यहां सब माया के बन्धन में बंधे (फंसे) पड़े हैं। ऐसे वचनों को सुनकर श्री राजजी महाराज ने आकर मेरी बांह पकड़ी।

बांहें ग्रही बेठी करी, आवेस दीधो अंग।
ते दिन थीं दया पसरी, पल पल चढते रंग।। ४३ ।।

बांह पकड़कर मुझे जागृत किया और अपने आवेश की शक्ति मेरे अंग में दी। उसी दिन से धाम धनी की कृपा पल-पल बढ़ती गई।

ओलखी इंद्रावती, वाले प्रगट कह्यूं मारू नाम।
आ भोम भरम भाजी करी, देखाड्या घर श्री धाम।। ४४ ।।

तब श्री श्यामाजी (श्री देवचन्द्रजी) ने मेहराज ठाकुर को देखते ही जाहिर कर दिया कि यह श्री इन्द्रावतीजी की आत्मा हैं और इस भूमि के संशय मिटाकर परमधाम दिखा दिया।

घर देखाडी जगवी, आप आवी आवार।
कर ग्रहीने कंठ लगाडी, त्यारे हूं उठी निरधार।। ४५ ।।

श्री राजजी महाराज ने इस बार आकर जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर जागृत करके परमधाम दिखाया। हाथ पकड़कर गले से लगाया। तब मैं उठकर सावचेत (सतर्क) हुई (मुझे सुध आयी)।

Nijanand App

भोम भली खेडी करी, जल सींचियूं आधार।
वली बीज मांहें वावियूं, सुणो सणगानों प्रकार।। ४६ ।।

मेरे हृदय रूपी भूमि को अच्छी तरह जोतकर (बार-बार वाणी सुनाकर संशय मिटाए) जागृत बुद्धि के ज्ञान रूपी जल से सींचा। फिर उसमें तारतम का बीज डाला। अब जो अंकुर फूटे उनकी हकीकत सुनो।

अंधेर भागी असत उड्यूं, उपनूं तत्व तेज।
जनम जोत एवी थई, जे सूझे रेजा रेज।। ४७ ।।

अज्ञान का अंधेरा मिट गया। असत संसार के पाखण्ड (रीति-रिवाज, कर्मकाण्ड तथा असत ज्ञान) उड़ गए और तारतम वाणी के तेज का प्रकाश हुआ। फिर मेरे अन्दर ऐसा अखण्ड उजाला हो गया कि मुझे सब कण-कण दिखने लगा।

कमाड छाड्या कोहेडे, उघाड्या सर्व बार।
रामत थई सर्व पाधरी, ए अजवालूं अपार।। ४८ ।।

संशय वाले ज्ञान के धुन्ध वाले दरवाजे छोड़ दिए और जागृत बुद्धि के ज्ञान वाले अखण्ड दरवाजे खोल दिए। माया का खेल सरल और सुगम हो गया। ऐसा अनन्त ज्ञान का उजाला हो गया।

सणगूं उठ्यूं ते सतनो, असत भागी अंधेर।
आपोपूं में ओलख्यूं, भाग्यो ते अवलो फेर।। ४९ ।।

इस ज्ञान का ही अब अंकुर फूटा है। असत ज्ञान का अंधेरा भाग गया है। मैंने अपने आप को पहचान लिया और संसार के इस उलटे चक्कर से छुटकारा मिला।

वाले ओलखीने आप मोसूं, कीधूं ते सगपण सत।
सनकूल द्रष्टे हूं समझी, आ जाण्यूं जोपे असत।। ५० ।।

वालाजी ने मुझे पहचानकर अपनी सच्ची सगाई का सम्बन्धी बनाया। मैंने भी खुश होकर सच्चे सम्बन्ध को समझा और संसार को झूठा जाना।

सनंध सर्वे कही करी, ओलखाव्या एधाण।
हवे प्रगट थई हूं पाधरी, मारी सगाई प्रमाण।। ५१ ।।

सब हकीकत कह करके धाम के पच्चीस पक्ष (निशान) बताए। अब मैं सीधे रूप से जाहिर हो गई और मुझे मेरे सम्बन्ध के सबूत मिल गए (प्रमाण मिल गए)।

हवे साथ मारो खोली काढूं, जे भली गयो रामत मांहें।
प्रकास पूरण अमकने, हवे छपी न सके क्यांहें।। ५२ ।।

अब मैं सब सुन्दरसाथ को खोजकर निकालूंगी जो माया में मिल गए हैं। अब मेरे पास पूर्ण जागृत बुद्धि का ज्ञान आ गया है। इसलिए वह अब कहीं भी छिप नहीं सकेंगे।

ओलखी साथ भेलो करूं, द्रढ करी दऊं मन।
रामत देखाडी जगवुं, कही ते प्रगट वचन।। ५३ ।।

पहचान-पहचानकर सुन्दरसाथ को इकट्ठा करूंगी और उनके मन में जागृत बुद्धि के ज्ञान से दृढ़ता ला दूंगी। परमधाम की स्पष्ट वाणी को सुनाकर खेल दिखाकर सुन्दरसाथ को जगाऊंगी।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ५३ ॥

Nijanand App